REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

पाणिनीय शिक्षा का भाषा वैज्ञानिक महत्व

डॉ. अभिमन्यु
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मदन मोहन मालवीय पी. जी. कॉलेज,
भाटपाररानी, देवरिया.

प्रस्तावनाः

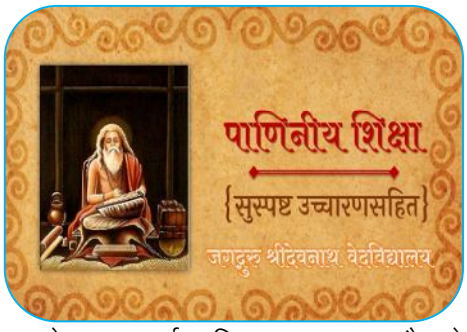

वैदिक काल खण्ड में वेद अध्ययन हेतु षड़ शास्त्रों का ज्ञान आवश्यक माना गया था। छः शास्त्रों में शिक्षा, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, कल्प, ज्योतिष प्रमुख रूप से आते हैं जो वेद के अध्ययनकर्ता के लिए आवश्यक माने जाते थें। इनके महत्व को रेखांकित करते हुऐ पाणिनीय शिक्षा में कहा गया है–

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पढ़यते।
ज्योतिशामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोंतमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

उपर्युक्त श्लोक में यह स्पष्ट कहा गया है कि– 'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य' अर्थात् शिक्षा वह शास्त्र है जो वेद की नाक है इस शिक्षा–शास्त्र में विशेष रूप से वर्णोच्चारण की परिज्ञान कराया जाता था ताकि वेदपाठी वेद–मंत्रों का शुद्ध उच्चारण कर सकें। शिक्षा का अर्थ सायणनें ऋग्वेद 'भाष्य–भूमिका' में किया है–

''वर्णस्वराद्युच्चारण प्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा''

अर्थात् जिसमें वर्ण स्वर आदि उच्चारण प्रकारों का उपदेश हो, उसे 'शिक्षा' कहते हैं।'' यह सर्व विदित है कि हिन्दी की आदि जननी संस्कृत रही है अतः भाषा विज्ञान की दृष्टि से हिन्दी के बहुत से नियम– संस्कृत से आये हैं जहाँ तक वर्णोच्चारण की बात है आज हिन्दी में काल प्रभाव से अनेक अशुद्धियाँ आ गयी है, जिन्हें स्वीकार भी किया जा रहा है। अतः आज पाणिनीय शिक्षा में प्रदत्त वर्णोच्चारण का सम्यक परिज्ञान आवश्यक हो जाता है जिससे कि 'परिमार्जित हिन्दी' का अनुप्रयोग हो सकें।

समकालीन हिन्दी भाषा विज्ञान एवं पाणिनीय शिक्षा का यदि तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो यह परिज्ञात होता है कि इस प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थ में वर्णों की संख्या, स्वर एवं व्यंजन के आधार पर विभाजन, आभ्यान्तर एवं बाध्य प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण, उच्चारण स्थान के आधार पर हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण एवं उत्तम अधम पाठकों के लक्षण को बताया गया है जो समकालीन भाषा के अध्येता के लिए बहुत ही उपयोगी एवं सहायक है। इसका अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है–

1. **वर्णों की उत्पत्ति–** इसमें बताया गया है कि आत्मा बुद्धि के द्वारा पदार्थों को संकलित कर उच्चारण करने की इच्छा से मन को प्रेरित करता है वही मन कायाग्नि मारूत अर्थात् प्राणवायु को प्रेरित करता है। यह प्राणवायु प्रथम फेफड़े में ही गूँजती हुई मन्द्र ध्वनि उत्पन्न करती है इसमें गायत्री–मंत्र छन्तोबद्ध है। यही प्राणवायु कण्ठ–प्रदेश में संचारण करते हुए, मध्यम स्थल के उत्पन्न करता है जिसमें त्रिष्टम छन्दों का प्रयोग होता है। पुनः शिर–प्रदेश में पहुँचकर 'तार स्वर' को उत्पन्न करता है जिसमें 'जगती' छन्दों में रचित मंत्रों

का उच्चारण होता है यह प्राण वायु ऊर्ध्व प्रेरित होकर मूर्धा में अर्थात् करके लौटता हुआ मुख विवर में पहुँचकर वर्णों को उत्पन्न करता है जिनका भेद पांच प्रकार का कहा गया है।

आत्मा बुद्धया समेत्यार्थान मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायोग्निमाहान्ति स प्रेरयति मारूतम्।।
मारुतस्तूरसि चरण् मन्द्रं जनयति स्वरम्।
प्रातः सवनयोगं तं छन्दों गायत्रिमाश्रितम्।।
कश्ठे माध्यन्दिनयुगं मध्यमं त्रैश्टुभानुनम्।
तारं तार्तीय सवनं भीर्शण्यं जागतानुगम्।।
सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापाद्य मारूतः।
वर्णाञजनयते तेशां विभागः पञचधा स्मृतः।।

खनि उत्पत्ति प्रक्रिया पर विचार करते हुए भाषा वैज्ञानिक अर्थवदेव द्विवेदी कहते हैं– ''मानवशरीर में दो प्रक्रियाएं प्रतिक्षण काम करती हैं– 1. साँस लेना 2. साँस निकालना प्रथम को श्वास या प्रश्वास कहते हैं। इसी को निःश्वास भी कहते हैं। अन्दर ली गयी श्वास ऑक्सीजन प्राणवायु है जो रक्त को शुद्ध करती है। इसके अलावा निःश्वास कार्बन डाई ऑक्साइड दूषित वायु बाहर निकलती है। यही निःश्वास ध्वनि एवं भाषा जैसे बहुमूल्य तत्व को जन्म देती है। इस प्रकार ध्वनियाँ भाषा निःश्वास का उपजात ;इल च्तवकनबजद्ध तत्व है। शरीर में फेफड़ों की सफाई के द्वारा यह प्राणवायु श्वास नली के मार्ग से निःश्वास रूप में बाहर आती है। स्वर–यंत्र तक पहुँचने से पूर्व इसमें कोई विभाखन नहीं होता है। ज्यों ही यह वायु स्वर तंत्रियों के मार्ग से अग्रसर होती है इसके अनेक स्वरूप हो जाते हैं श्वास, नाद, घोष, अद्योष, अल्प प्राण, महाप्राण आदि भेद स्वर तंत्री की विशेष स्थितियों के कारण होते हैं।

2. वर्ण विभाग– वर्ण विभाग की दृष्टि से पाणिनीय शिक्षा में कहा गया है कि– स्वर, काल स्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न एवं बाह्य प्रयत्न की दृष्टि से पांच प्रकार कहा गया है–

स्वरतः कालतः स्थानात्प्रयत्नानुप्रदानतः।
इति वर्णविदः मपाहुर्निपुणं तन्निबोधत।।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं– ''ध्वनियों का सबसे प्रचलित और प्राचीन वर्गीकरण स्वर और व्यंजन रूप में मिलता है। भारत में स्वर और व्यंजन के अन्तर के संकेत पहले (ब्राह्मणों–आरण्यकों में) मिलते हैं किन्तु स्पष्ट रूप से इसे कहने का श्रेय महाकाव्यकार पंतजलि को है।''

3. उच्चारण स्थान के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण–

पाणिनीय शिक्षा में वर्ण उच्चारण के आठ स्थान बताये गये हैं– उरः कण्ठ, शिरः जिहवामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ, और तालु,–

अश्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्त तथा।
जिह्वामूल च दन्ताश्च नासिकौश्ठौ चंतालुच।।

हिन्दी भाषा विज्ञान के मर्मज्ञ विद्ववान् डॉ. रामदरश राय जी कहते हैं– संस्कृत तथा हिन्दी में प्रयुक्त ध्वनियों में उच्चारण स्थान का विशेष महत्व है। वर्णों के उच्चारण काल में मुख के अन्दर जिस अवयव की सहायता ली जाती है उसे सम्बन्धित वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं ..... स्थान की दृष्टि से उच्चरित ध्वनियों का वर्गीकरण–काकल जिहवामूलीय, कंठ्य, तालव्य, वर्त्स्य, दन्त्य, मूर्धन्य ओष्ट्य यह आठ स्थान हैं।

4. प्रयत्न की दृष्टि से ध्वनियों का वर्गीकरण– संस्कृत भाषा विदों ने प्रयत्न के दो भेद किए हैं– आभ्यन्तर एवं वाह्य–**यत्नौ द्विधा आभ्यान्तर वाहयश्चय**'' 'अष्टाध्यायी' इस 'शिक्षा–ग्रन्थ' मेंयह श्लोक मिलता है–

संवृतमात्रिकं ज्ञेयं विवृतं तु द्विमात्रिकम्।
घोशा वा संवृताः सर्वे अघोशा विवृताः स्मृताः।।

महर्षि पाणिनि ने (क) आभ्यन्तर और वाह्य प्रयत्न के यह दो भेद बताये एवं आभ्यन्तर प्रयत्न के पांच भेद बताये–

1. स्पृष्ट, 2. ईषत्स्पृष्ट 3. ईषद विवृत 4. विवृत 5. संवृत तथा वाह्य प्रयत्न के एकादश भेद बताये हैं– विवार, संवार, श्वास, नाद, अद्योस घोष अल्प प्राण, महाप्राण उदात्त अनुदात्त, स्वरित– हिन्दी भाषा विज्ञान में भी कहा गया है कि– ''मुखविवर में किया जाने वाला प्रयत्न 'आभ्यन्तर प्रयत्न' कहलाता है हिन्दी में इसे–स्पर्श, संघर्षी, स्पर्श–संघर्षी, पर्श्विक, लुंष्ठित, उत्क्षिप्त, नासिक्य, अर्द्धस्वर स्वरतंत्री और अलिजिहव के व्यापार 'वाह्य–प्रयत्न' कहलाते हैं। कोमल तालु के बाद के स्थान मुख या आस्य से बाहर माने जाते हैं। तात्पर्य यह है कि मुख से बाहर ओष्ठ से नासिकाविवर के बाहर होने वाले प्रयत्न बाह्य प्रयत्न कहलाते हैं। हिन्दी में इसके दो भेद है।
2. अघोष
3. सघोष

5. अधम/उत्तम पाठक के लक्षण– पाणिनीय शिक्षा में योग्य एवं अयोग्य पाठक वर्ग का निर्धारण करते हुए की विचार किया गया है जैसे–

गीती भीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकश्ठश्च शडेते पाठकाधयाः।।
माधुर्यमक्षरण्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्य लयसमर्थ च शडेते पाठका गुणा।।

अर्थात् गा–गा कर पढ़ने वाला इससे यति भंग दोष होता है। जल्दी–जल्दी पढ़ने वाला, शिर हिला–हिलाकर पढ़ने वाला, जैसे पुस्तक में है वैसे ही बिना आरोह अवरोह के पढ़ने वाला, बिना अर्थ समझे ही पढ़ने वाला, गले में गुनगुनाने वाला ये छः अधम पाठक होते हैं। जबकि उत्तम पाठक में उच्चारण में माधुर्य, स्पष्टता पदच्छेद सुस्वर, धैर्य तथा लय सम्पन्नता होती है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाणिनीय शिक्षा वर्णोच्चारण की सम्यक परिज्ञान करने वाला एक शास्त्र है आज के नव युग में जब शिक्षक/छात्र वर्णोच्चारण पर ध्यान नहीं देते तो ऐसे शास्त्रों की उपादेयता बढ़ जाती है यह केवल उच्चारण का ज्ञान ही नहीं करता अपितु हिन्दी भाषा विज्ञान की नीव का निर्माण भी करता है, जो समकालीन भाषा वैज्ञानिकों को वर्ण संख्या, वर्ण विभाजन, उच्चारण स्थान, उच्चारण प्रयत्न आदि दृष्टियों का भी विकास करता है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **पाणिनीय शिक्षा–** : सम्पादक विद्या सागर डॉ. दामोदर महतों नरेन्द्र प्रकाशन जैन, मोती लाल बनारसीदास–दिल्ली द्वारा प्रकाशित जैनेन्द्र प्रेस द्वारा मुद्रित प्रथम संस्करण पृष्ठ–48 श्लोक 41,42
2. **पाणिनीय शिक्षा** : प्र.सं. संपादक डॉ. दामोदर दास महतों प्र0लं0 1990 जैनेन्द्र प्रेस दिल्ली, पृ. 10,11,12,13,
3. **भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र** : कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी चतुर्थ संस्करण पृ. 112
4. **पाणिनीय शिक्षा** : पृ. 16 श्लोक–10
5. **भाषा विज्ञान** : डॉ. भोलानाथ तिवारी किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद ..... संस्करण पृ. 306
6. **पाणिनीय शिक्षा** : पृ.–19 श्लोक 13
7. **भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा** : डॉ. रामदरश राय, भवदीय प्रकाशन अयोध्या फैजाबाद संस्करण– 2018 पृ.–85–86
8. **पाणिनीय शिक्षा** : पृ. 25, 26
9. **भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा** : प्रो. रामदरश राय, भवदीय प्रकाशन अयोध्या संस्करण 2018 पृष्ठ– 86–87
10. **पाणिनीय शिक्षा** : पृष्ठ–41, 42 श्लोक 32, 33